अगड़म बगड़म

सुकुमार राय के 'आबोल ताबोल' का अनुवाद

अनुवादक – **लाल्टू O सुवास कुमार**

सुकुमार राय की भूमिका

कैफियत

जो अजीब है, जो बेढंगा है, जो असंभव है, इस पुस्तक का ऐसी बातों से ही कारोबार है। यह दिमागी रस की पुस्तक है। इसलिए इस रस का आनंद जो नहीं ले सकते, यह पुस्तक उनके लिए नहीं है।

पुस्तक की अधिकांश तस्वीरें और कविताएँ 'संदेश' पत्रिका के अलग-अलग अंकों से ली गई हैं। यहाँ यथावश्यक संशोधन व परिवर्त्तन कर और कई जगह नई सामग्री जोड़कर उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित किया जा रहा है।

-ग्रंथकार

मूल रचना में सुकुमार राय के सभी स्केच यहाँ जस का तस रखे गए हैं - अनु०

सूची

अगड़म बगड़म

आ रे भोले, आ मन खोले,
सपन झूल झुलाए आ,
आ रे पगले, अगड़म बगड़म,
मादल मस्त बजाए आ।
आ सुन सनकी गीत निराले,
ना कोई मतलब, ना कोई सुर,
आ कि जहाँ उनचास पवन में,
मन बह जाए कहीं सुदूर,
आ पागल मन तोड़ दे बंधन,
झूम के नाचें ता धिन धिन,
आ आवारा, जग का मारा,
आ जा बेहिस नियमहीन।
चाल अटपटी, ताल बेताल,
मस्त कलंदर रंगों में,
जग की भूलभुलैया में आ,
आ असंभव-छंदों में।

खिचड़ी

बत्तख था, साही भी, (व्याकरण को गोली मार)
बन गए 'बत्ताही' जी, कौन जाने कैसे यार!

बगुला कहे कछुए से, "गजब की है मस्ती
अच्छी-खासी होगी रे, बगुछुआ की दोस्ती!"

तोता-मुँही छिपकली, सोच में है पड़ी जी -
छोड़ कीड़े खानी होगी कच्ची-तीखी मिर्ची?

बकरे के पेट में, छिपी थी जबर चाल
बिच्छू की गर्दन पर जुड़ा, सिर हुआ बवाल!

जिराफ कहे साफ ये, घूमूँ न मैदानों में
झींगुर भला उसे लगे, जाए संग उड़ानों में!

गाय सोचे, “मुझको ये कैसा रोग लागा
पीछे से कैसे आ जुड़ा यह मुर्गा अभागा!”

हाथी ह्वेल हथह्वेल हुए, देखो इनका शगल
चाहे ह्वेल सागर जल, हाथी कहे -"जंगल चल!"

सिंह के सींग नहीं, उसको है यही गिला
जुड़ा जो हिरण से, तो सींग ही सींग मिला!

काठ-बुड्ढा
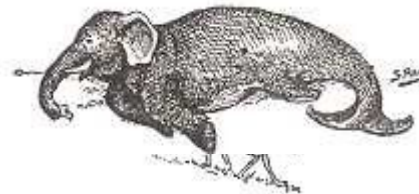
हाँड़ी ले दाढ़ीवाला बुड्ढा करे ठाठ
बैठ धूप में चाट-चूट कर खाए उबला काठ।
मूँड़ी हिला गाना गाए, गुन-गुन करे याद -
भाव देख कर लगे कि जैसे बड़ा हो उस्ताद!
क्या तो बड़-बड़ बोले जिसमें जरा नहीं तुक-तान -
"काठ में गड्ढा, क्योंकि लगे हैं जाले आस्मान।"
तप रहा सिर गंजा उसका, बदन बहुत ही गर्म
गुस्से में कहता है, "कौन जो बूझे मेरा मर्म?"
अरे मुए मूढ़ गधे, अंधे सब सफाचट,
कोई बूझे ही नहीं, खाली करते सब खटपट।
कौन काठ में कित्ता है रस, ना जानें यह भेद -
एकादशी रात को ही, क्यों होता काठ में छेद?"
अगल-बगल घिचिर-पिचिर लिखता रहता संख्याएँ -
टूटे-फूटे काठों का हिसाब यह बढ़ता जाए;
किस लकड़ी का स्वाद भला है, और कौन बेकार,
किस दरार से कैसी बदबू की होती बौछार।
काठ-काठ को ठोक-ठाक कर ठका-ठक ठसठस,
बोले बुड्ढा, "जानूँ कैसे कौन काठ आए बस;
लक्कड़-बक्कड़ घोंट घाँट कर मैं बूझा भरपूर,
किसी काठ के पाजीपन को कैसे कर दूँ दूर।
आखिर कौन काठ पालतू, और कौन है संत,
कौन काठ करता है टिमटिम, और कौन जीवंत।
झूठ साँच में काठ कौन-सा करे न कोई भेद,
पता मुझे है किसी काठ में क्यों होता है छेद।"

मूँछ ले गए चोर

हेड आफिस के बड़े बाबू हैं बड़े शांत भाव के
रोग दिमाग का उनको होगा किसे पता था हाय रे?
मजे मजे में खुशमिजाज बैठे थे कुर्सी चाँपे
बैठ-बैठे जो आँख लगी तो उठे अचानक, काँपे!
घबराए-से, कूद-फाँद कर, आँखें गोल घुमाकर,
लगे चीखने, "अरे मरा मैं, मुझे बचाओ आकर!"
यह सुन कोई बैद तो कोई लगा पुलिस बुलाने।
"काट न डाले, ध्यान से पकड़ो," कोई लगा चिल्लाने।
परेशान हो जुटे सभी, फिर मचा शोर घनघोर -
बाबू बोले - "अरे रे, मेरी मूँछ ले गए चोर।"
मूँछें गायब! गजब बात! लेकिन हो सकता क्योंकर?
मूँछें दोनों वैसी ही हैं; हुईं न कम रत्ती भर।
बार-बार सब समझाएँ, लाकर दिखलाएँ आईना,
कतई मूँछें हुईं न चोरी , किसी की कभी हुई ना।
आग बबूले, बैगन से फूले, सबको हड़का डाले,
"नहीं किसी की मानूँगा, चीन्हूँ मैं सबको साले।
टेढ़ी-मेढ़ी सींक-सरीखी, गंदी और कुरुप,
ऐसी मूँछ तो रखता केवल ग्वाला श्यामस्वरुप
मेरी मूँछ बताते इसको, जिबह करूँ मैं सबका"-
ऐसा कहकर एक-एक पर फिर ज़ुर्माना ठोंका।
बाबू गुस्से में बेकाबू हो, यूँ भरने लगे रजिस्टर,
"कभी किसी को मुँह न लगाओ, जाते हैं सब सिर चढ़।
दफ्तर में सब भरे हैं बंदर, जिनके दिमाग में गोबर,
मूँछें गईं कहाँ आखिर, यह हुई न किसी को खबर!
जी करता है इन बेटों की मूछों से लटक के नाचूँ,
ले कुदाल इन मूर्खों की गर्दन झटकूँ काटूँ।
मूँछ को कहते तेरी-मेरी, जैसे मालिक हों मूँछों के!
मूँछों का मैं, मूँछों के तुम, पहचान हमारी मूँछों से।"

अच्छा वर

खबर मिली पोस्ता में भाई
है तेरी लड़की की शादी?
दूल्हा मिला है गंगाराम?
बतलाऊँ कितना नाकाम?
बुरा नहीं, वर अच्छा है -
रंग का थोड़ा कच्चा है;
लगता पर चेहरा कैसा
थोड़ा-थोड़ा उल्लू जैसा।
शिक्षा-दीक्षा? बतलाता हूँ -
अध्ययन पर उसकी आता हूँ!
उन्नीस बार घायल हो-हो कर
मैट्रिक में रह गया अटक कर।
धन-संपत्ति? कुछ नहीं है भाई-
दु:ख में दिन और रात बिताई।
वैसे हैं उसके भाई चार -
एक है पागल एक गँवार;
और एक बन गया है नेता
नोट जाली कर जेल में बैठा।
सबसे छोटा तबले का बजैया
नौटंकी में ले पाँच रुपैया
गंगाराम तो हरदम तड़पे
मलेरिया और पीलिया ज्वर से,
पर उनका है ऊँचा वंश
पूर्वज थे उनके राजा कंस!
श्याम लाहिड़ी वनग्राम के
कुछ लगते हैं गंगाराम के। -
खैर, जैसा भी वर तो मिला,
अब चाहे हो बुरा या भला?

उल्लू और उल्लुआनी

उल्लू कहे उल्लुआनी
खासी तेरी चिल्लानी!
सुन-सुन अन मन
नाचे मोर प्राणमन!
मँजा गला सधा सुर
आह्लाद से भरपूर
गलाफाड़ू क्या ही गमक
पेड़-पौधे जाएँ चमक,
सुर में हैं पेंच कई
गलाकारी वाह भई!
जित्ता डर जित्ता दुःख
धड़-धड़ और धुक-धुक
तेरे गीत उल्लुआनी रे
सब कुछ भुलवानी रे
चाँदमुख मीठा गान
झरें बहें दो नयान।

गुदगुदिया बाबा

और कहीं भी जाओ रे भैया सात समंदर पार
गुदगुदिया बाबा से बचना, रहना खबरदार!
खतरनाक बाबा हैं भइया मत जाना उसके बाड़ी -
गुदगुदी की कुल्फी देगी कुतर पेट की नाड़ी।
रहता कहाँ न जाने कोई, कौन गली किस मोड़
अकेला पाकर जबरन सबको गप्प सुनाता घोर।
कथाएँ उसकी बड़ी भयंकर, न जाने किस मुल्क की,
सुनकर जिनको हँसी आए कम, रोना आए खूब ही!
सिर न पाँव है उनका कोई, न कोई उनका माने
फिर भी भैया हँसना होगा, तुमको किसी बहाने।
कहता सिर्फ कहानी ही तो, सह भी जाते सुनकर
करे बदन में बहुत गुदगुदी, लंबी पाँख छुआकर।
बोले केवल, "हाः, हाः, हाः, हा, किसनदास की बुआ -
कुम्हड़ा, कच्चू, अंडा बेचे, बेचे तीसी तिलवा
लंबे-लंबे अंडे हैं, और कुम्हड़े आँके बाँके
रंग-बिरंगी अरबी जिस पर, रंगोली है छापे।
आठ पहर है गाती बुआ, स्वर को बना महीन
म्याऊँ, म्याऊँ, बकुम भकुम, भौं-भौं चिहीं-चिहींन।
इतना कहकर सट से काटे गर्दन पर वह चिउँटी
सूखी-पतली उँगली से वह कोंचे पसली सबकी।
तुम्हें गुदगुदा, खुद ही होता लोटपोट हँसते-हँसते,
जब तक हँसने लगो न भाई, छूट नहीं तुम सकते!

गाने का धक्का

ग्रीष्मकाल में तान छेड़ते भीष्मलोचन शर्मा -
गाना उनका बोले धावा दिल्ली से जा बर्मा!
अपने प्राणों का मोह छोड़, जी-जान लगा के गाएँ,
जन-जन चारों ओर भागते भन-भन सिर चकराए।
जख्मी होकर मरते कितने, करते कितने छटपट,
और चीखते, "जान गई रे, रोको गान फटाफट।"
बंधन तोड़ें भैंसे घोड़े, सड़क किनारे चित्त गिरें;
तानें तान भीष्मलोचन बस, इधर-उधर न नजर पड़े।
चौपायों के पाँव हैं ऊपर, उलट गिरें हो-हो मूर्छित,
टेढ़ी है दुम, होश हुए गुम, बोलें गुस्से में "धत् छिः।"
जल के प्राणी, पा हैरानी, डूबे गहरे में चुपचाप,
वृक्ष वंश, बस हुए ध्वंस हैं, बेशुमार सारे झुपझाप।
खाएँ चक्कर, मार कुलाटी, हवा में पक्षी सारे,
सभी पुकारें, "बस कर दादा, रोको गाना प्यारे।"
दहाड़ तान की, फाड़ आस्माँ, लाए आँगन में भूकंप,
भीष्मलोचन का गाना भीषण, मार खुशी के दिल हड़कंप।
टक्कर का उस्ताद मिला, इक बकरा हक्का-बक्का,
गीत में ताल दिया पीछे से, मार सींग से धक्का।
फिर तो बात-बात में, जैसे पड़ा गान पर डंडा,
भीष्मलोचन हो गए "बाप रे" कहकर बिल्कुल ठंडा।

चाचा की मशीन

चंडीदास के चाचा ने मशीन इक अजब बनाई है
बच्चे-बड़े, जो सुनें, कहें बधाई है, बधाई है।
चाचा छोटे थे जब, होंगे रहे साल भर के-
'गोंगों' कहकर पहले रोए, बड़े जोर से फिर चीखे।
वैसे तो बच्चे कहते 'मामा', 'गागा' अगड़म बगड़म;
चाचा के मुँह से सुन 'गोंगों', चौंक उठे थे सारे जन।
सबने कहा, "अगर यह लड़का ज़िंदा रह जाएगा,
अपनी बुद्धि के बल से यह दुनिया में नाम कमाएगा।"
एक मशीन बनाई आज उसी चाचा ने लगा दिमाग
दूरी पाँच घंटों की होगी तय, डेढ़ ही घंटे भाग।
अभी देखकर मैं लौटा, अति सहज-सरल है यंत्र
घंटे पाँच लगाओ, तब जाकर समझो उसका तंत्र।
बतलाऊँ क्या खूबी जंतर की, शब्द नहीं हैं पास,
गर गर्दन से जोड़ के चलो, यंत्र बड़ा है खास।
आगे उसके भोजन लटके, पसंद हो जैसी जिसकी -
पूड़ी दोसा कटलेट हो, या हो फिर पेड़ा बरफी।
मन कहता है, खाऊँ, खाऊँ, मुँह बढ़ता है आगे,
मुँह के आगे भोजन दौड़े, उसी तेजी से भागे।
पीछे-पीछे भोजन के लालच में यों ही खिंचकर,
दौड़ चलोगे बिना रुके ही, अपने होश गँवाकर।
बिना कष्ट के, हँसी-खेल में दो दस योजन पहुँचोगे
भोजन-सुगंध में बेसुध हो टपकेगी लार, नहा लोगे।
बच्चा हो जवान या बूढ़ा, कहते सब मिल एक ही स्वर,
चंडीदास के चाचा ने जग में दिखलाया अद्भुत कर ।

जंगी जग्गू

अपना यह पगला जग्गू हर रोज यहाँ है दिखता;
मन ही मन गाता रहता है मीठा-मीठा हँसता।
चौंक अचानक रुक-रुक जाता रस्ता चलते-चलते,
झट कूदे दाएँ से बाएँ लगा छलाँग उछलके।
तीखी मुद्रा आस्तीन चढ़ा सँभाले धोती काँछ,
हवा में 'अइयो' कहकर बेसुध मुट्ठी रहा है भाँज।
चीख कर कहता, "जाल रचा है? जग्गू उसमें फँसेगा?
अकेला जग्गू सात हैं जर्मन, फिर भी जग्गू लड़ेगा।"
गर्मजोशी से, तमतमकर के तिड़िंग बिड़िंग वह नाचे,
कभी दौड़कर जाए आगे, भागे कभी तो पाछे।
भाँजे छतरी घुमा, हवा में मारे धपास धूम,
आँखें मींच के बाजीगर सा, चकरी जैसा घूम।
कूद-कूद थक चूर-चूर है, पसीना बदन से झड़ता,
धड़धड़ाम धरती पर वह, फिर लंबलेट हो गिरता।
हाथ-पैर उछाल चीखता, लहू आँखों में लाता,
कहता, 'देखो जग्गू गोले से कैसे झट मर जाता!'
इतना कहकर एक मिनट तक खूब ही तड़प तड़प कर,
मुर्दे-जैसा अकड़ हुआ चुप, गिरा फिर बीच सड़क पर!
फिर सीधा उठ बैठा, सिर को जरा-जरा खुजलाया,
एक बही खाता निकालकर जेब से बाहर लाया।
उसमें लिखा कि- 'सुन रे जग्गू, भीषण हुई लड़ाई
अपने दुश्मन पाँच मार के, मर गया जग्गू भाई।"

छायाबाजी

नहीं अजूबा, नहीं अजूबा, है यह सत्य कथा -
छाया के संग कुश्ती लड़के हुई गात में व्यथा!
मैं छाया धरने का व्यापारी, नहीं जानते बाबूजी?
धूप की छाया, चाँद की छाया, यह सब ही मेरी पूँजी!
ओस में भीगी टटकी छाया, सुबह-सुबह की ताजी
पर गर्मी की सूखी छाया, धूप में बनती भाजी।
उड़तीं चीलें आस्मान में दुपहर के सानंद,
जाल डाल कर इनकी छाया, करूँ पिंजड़े में बंद ।
कौवे की, बगुले की देखी छाया मैंने कितनी ही
चाटी हल्के मेघ की छाया जो थी फीकी फीकी।
कोई न जाने ये सब बातें, कोई न यह सब माने
कोई न दौड़े मेरे जैसा, न छाया को पहचाने।
तुम क्या सोचते पेड़ की छाया, लोटे यूँ ही धरती पर,
सो जाती है शांत चित्त वह, वजह नहीं रत्ती भर?
असली कारण मैं बतलाऊँ, कहता हूँ वह सुनो,
जो भी कहता सच है सब ही, शक न मन में बुनो।
कोई जब हो नहीं सामने, कोई देख न पाए,
पेड़ की छाया छटपट तड़पे, देखे दाएँ बाएँ।
ठीक तभी पीछे से गुपचुप रेंग रेंग कर आओ,
पटक टोकरी उसके ऊपर, पकड़ो उसे दबाओ।
पतली छाया, पोली छाया, छाया गहरी काली
पेड़ से बढ़कर पेड़ की छाया, होती है गुणवाली।
जड़ें पेड़ की, छाल पत्तियाँ, लोग बेकार ही निगलें
भागे रोग 'बाप रे' कह कर, छाया-औषध जो ले लें।
नीम और झिंगुनी की छाया, पीस के पाक बना ले,
ले खर्राटे, बड़े मजे से सोए जो भी खा ले।
पकड़ सका चाँदनी रात में पपीते की जो छाया,
वही सूँघ सर्दी खाँसी से उसने छुटकारा पाया।
अमड़ा पेड़ की कचड़ा छाया, काट दाँत से खाए,
जरा नहीं शक, लँगड़ा भी जो पाँव नया पा जाए।
मास आषाढ़ की बदली से अगर तुम बचना चाहो,
छाया तप्त इमली तल की तीन हफ्ते तक खाओ।
महुए की मीठी छाया को, मैंने 'ब्लाटिंग' से सोखा
सावधानी से धो पोंछ कर घर में पाला-पोसा ।
ताजी टटकी नई दवा यह, बिल्कुल अपनी देशी
सस्ते दाम में बेच रहा हूँ, चौदह आने शीशी।

कुम्हड़ाफटाक

(अगर) कहीं जो कुम्हड़ाफटाक नाचे -
खबरदार कोई न आए अस्तबल के पाछे
देखे मत दाएँ-बाएँ, न आगे-पीछे झाँके ;
टाँगें चारों रखे झुलाए, मूली पे लटका के !

(अगर) कहीं जो कुम्हड़ाफटाक रोए -
खबरदार! खबरदार! कोई न छत पे सोए ;
जा मचान पे लेट रहे, रजाई-कंबल ओढ़े;
राग बिहाग में गाए केवल "राधे कृष्ण राधे !"

(अगर) कहीं जो कुम्हड़ाफटाक हाँसे -
एक टाँग पर रहे खड़ा चूल्हे के आसे-पासे ;
फँसी आवाज में फारसी बोले, फिसफिस निकलें साँसें;
लेटा रहे घास पे रखकर तीन पहर उपवासे !

(अगर) कहीं जो कुम्हड़ाफटाक दौड़े-
हड़बड़ तड़बड़ कर हर कोई खिड़की पर जा चढ़े;
हुक्कापानी में लाल आलता घोल गाल पर मल ले;
गलती से भी आसमान की तरफ न कोई देखे !

(अगर) कहीं जो कुम्हड़ाफटाक बुलाए -
सभी लगा सेंवार देह में गमले पर चढ़ जाएँ ;
सिल पर घिस कर पके साग का मरहम सिर पर लगाए ;
तपा तपा कर ईंट का झावाँ नाक पे रगड़े जाए !

बकवास समझ इन बातों को जो भी अनदेखा करे ;
कुम्हड़ाफटाक जान जाए गर फिर हरजाना भरे ;
तब देखेगा बात कौन सी फलती जाए कैसे;
फिर न कहना दोष है मेरा, कह देता हूँ अभी से।

सावधान

अरे अरे रे यह क्या भाई पेलाराम विश्वास?
फूँसफाँस करके ऐसे छोड़ो काहे निःश्वास!
उस गाँव का भूतनाथ, गत बरस नहीं जानते क्या,
साँसें ऐसे ही लेते-लेते कुँए में जा गिरा?
हाँफ रहे हो सों सों फों फों ऐसे मुँह को खोल -
घुस जाए गर मक्खी-मकड़ा, निकलेंगे क्या बोल?
विपिन का अपना बूढ़ा चाचा, नहीं जानते हलधर राय,
पाँच महीने हैजे से कैसे तड़पा था मक्खी खाय।
तभी तो कहता - सावधान हो! करो नहीं धुपधाप,
टिपटिप करके पाँव पाँव ही निकल पड़ो चुपचाप।
नहीं देखना आगे पीछे, और न जाना दाँए-
सावधानी से जान बचे, ऐसा कानून बताए।
'कथा-सागर' में पढ़ा तो होगा, अरे वही जो बंदा
राह पे चलते गिरा गोबर में छिः छिः कैसा गंदा।
बात ठीक है- अबसे कभी सुबह में या दुपहर में
कभी किसी दिन नहीं नहाना घोष बाबू के पोखर में
इतनी मोटी काया पर, पता नहीं कहाँ किस दिन
टपक अचानक पड़े मुसीबत, सोचो बात बड़ी संगीन!
बिगड़ रहे क्यों, कब क्या होगा, किसको पता स्पष्ट,
अगर कहीं कुछ हो ही जाए, तब पाओगे कष्ट।
बेमतलब की घिचिर-पिचिर क्यों, जब देखो तब तर्क?
चलाते रहते दादागीरी, रहते खुद में गर्क।
नहीं मानते हो कोई आचार, विचार, आहार
टेर पाओगे तभी, जब ठोकर खाओगे इक बार।
मँझले मामा रमेश के, थे तीसमार खाँ बनते
बातें भली कहूँ जितनी भी, एक न मेरी सुनते
आखिर एक दिन वे चाँदनी चौक बाजार गए
बीच सड़क गाड़ी के नीचे आके स्वर्ग सिधार गए।

बाबूराम सँपेरा

बाबूराम सँपेरे
कहाँ किधर चले रे?
आ रे बाबा देख जा
दो ठो साँप रख जा! -
साँप न जिसके आँख हो
सींग हो, न पाँख हो,
चले न वो दौड़े ना
कभी किसी को काटे ना,

करे ना वो फोंसफाँस,
मारे न वो ढोंसढाँस,
जो न करे उत्पात,
खाए खाली दूधभात -
ज़िंदा ऐसे साँप दो
ला कर मेरे पास रखो !
मार पीट कर डंडा,
कर दूँ बस ठंडा!

नीमहकीम

एकबार देख जाओ डाक्टरी करामात -
काटा फूटा टूटा होगा झटपट मरम्मात।
कह गए गुरु मेरे, "सुनो, सुनो, वत्स,
कागज के रोगी काट पहले करो वर्जिश।"
क्या न होता जोश से? क्या न होता कोशिश से?
झटपट अभ्यास करो, हाथ सधें जिससे।
खट-खट के पानी हुआ देह का रक्त,
सीखा तो जाना तालीम नहीं सख्त।
ठोकठाक चीर फाड़ देखे कितने यंत्र
तोड़-फोड़ जोड़ दूँ इनके जानूँ मंत्र।
आँखें मूँद झटपट, बड़ी-बड़ी मूर्ति,
घिचघिच काटूँ जैसे, वैसे बढ़े मस्ती।
काटी टाँगें गर्दन, कितने काटे हाथ
लगा लगा गोंद, उन्हें जोड़ा बातों-बात।
अब मुझे लगता है, रोगी पाऊँ ज़िंदा
अरे भोला, पकड़ ला छः सात बंदा।
गठिए से मर रहा, उस पाड़ा का नन्दी,
ठीक होऊँगा न, इसी सोच का है बंदी -
लाऊँ उसे एक दिन फुसला यहाँ पर,
हाथ-पाँव तोड़ छोड़ूँ गठिया भगा कर।
कान करे कुटकुट, किसकी है नाक सर्द
आ जाओ, डर कैसा? मैं जो हूँ महाबैद।
टूटी है टाँग उसकी? लाओ लाओ यहाँ पकड़
देखते रहो कौसे स्क्रू लगा जोड़ूँ जकड़।
चिंता क्या, फूले गाल? - दर्द है क्या दाँत में?
ठोक ठीक कर दूँगा, मत रोओ बेबात में।
इस तरफ दो बचे दाँत, उस तरफ तीन
देना जरा चिमटा, खींचूँ गिन गिन।
बच्चे या बूढ़े हों, अंधे हों या पंगु
करुँ नहीं भेदभाव, हैजा और डेंगु -
काला ज्वर, पाला ज्वर, पुराना या टटका
मारुँ जो हथौड़ा, फिर देखो कैसे सटका।

चोर पकड़ना

अरे छिः छि:! राम राम! अब कुछ न कहा जाए -
जैसी चोरी चली हुई है, तुलना दी क्या जाए।
जैसे ही लूँ झपकी मैं, रख टिफिन सामने,
भोजन घट जाता है, भारी परिमाण में!
देखूँ, रोज खा जाता है आके यहाँ जाने कौन
कल जो हुआ, डाका भी है उसके आगे गौण!
पूरे पाँच कटलेट, पूड़ी एक दर्जन,
बालूशाही भी थे दो, और दो कलाकंद;
डब्बे में था और भी कुछ, आलू छोले घुघनी -
नींद से जगा तो था थाली में कुछ नहीं!
इसी से है क्रोध मुझे, और कितना हारूँगा,
अब तक बरदाश्त किया, अब तो मैं मारूँगा।
खड़ा हूँ सारा दिन, चौकन्ना मैं पहरे पर,
देखूँ कौन खाता था रोज लुकछिपकर।
रामू हो कि दामू हो कि उस पाड़ा के घोष-बोस,
जो भी हो रुक जाएगा, अब न होगा फोंसफोंस।
नहीं चलेगा रोना धोना, नहीं चलेगा दाँवपेंच,
पाऊँ जिसको, पकड़ के गर्दन, काटूँ घेंचाघेंच।
यह देखो ढाल लिए, खड़ा हूँ मैं छिपकर,
चलेगा पता देखे जब मूँड़ी निकाल बढ़ कर।
रोज कहूँ, 'सावधान! जूँ न रेंगे कान में?
आएगी ठिकाने अक्ल, आओ जरा सामने!'
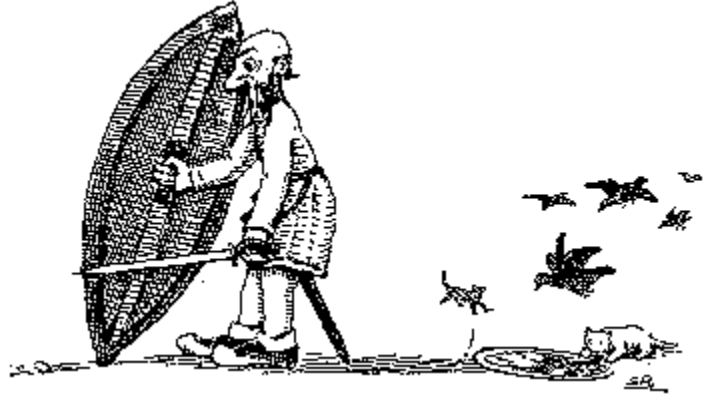
अजीब बात

दादा! सुना है बूढ़ा बैद जो रहता है वहाँ पर
क्या वह खाता रोज हाथ से भात सान कर ?

सुना यह भी कि लगती भूख भी उसे सारा दिन बिन खाए?
और झपकतीं आँखें उसकी जब भी नींद जोर से आए?

धरती पर ही पड़ते उसके पाँव है जब वह चलता?
कानों से सुनता है सब कुछ? आँखों से सब दिखता?

वह सोता है सिर को केवल सिरहाने पर टिकाए?
है यह सच या झूठ चलो यह खुद ही देख कर आएँ?

बढ़िया रे बढ़िया!

दादा! दूर तक सोच-सोच देखा -
इस दुनिया का सकल बढ़िया,
असल बढ़िया नकल बढ़िया,
सस्ता बढ़िया दामी बढ़िया,
तुम भी बढ़िया, हम भी बढ़िया,
यहाँ गीत का छंद है बढ़िया
यहाँ फूल की गंध है बढ़िया,
मेघ भरा आकाश है बढ़िया,
लहराती बतास है बढ़िया,
गर्मी बढ़िया बरखा बढ़िया,
काला बढ़िया उजला बढ़िया,
पुलाव बढ़िया कोरमा बढ़िया,
परवल माछ का दोलमा बढ़िया,
कच्चा बढ़िया पक्का बढ़िया,
सीधा बढ़िया बाँका बढ़िया,
ढोल बढ़िया घंटा बढ़िया,
चोटी बढ़िया गंजा बढ़िया,
ठेला गाड़ी ठेलते बढ़िया,
ताजी पूड़ी बेलना बढ़िया,
ताईं ताईं तुक सुनना बढ़िया,
सेमल रुई धुनना बढ़िया,
ठंडे जल में नहाना बढ़िया,
पर सबसे यह खाना बढ़िया -
पावरोटी और गुड़ शक्कर।

किंभुत्!

बेहूदा जानवर किंभुत् किमाकार
खुटखुट करता दिनभर बार बार।
बाट पर घाट पर रो मरे लगातार
ना-ना के नखरे, नालिश हैं बेशुमार।
यह भी दो, वो भी दो, माँगता है कितना-
असल क्या चाहिए, समझ में न आता।
कोकिल कंठ-सा चाहता है सुर
अपना स्वर सुनकर कहता, "छिः दुर" ।
उड़ते बेरोक हैं पंछी आकाश में -
रोता वह क्यों नहीं पंख उसके पास में!
हाथी के पास जैसे दाँत और सूँड़-
काश! जुड़ जाएँ वैसे इसके भी मूँड़!
कंगारू जो उछले तो दिल जल जाए -
टाँगें टनटनातीं ऐसी उसे भी मिल जाएँ!
अयाल वाले सिंह-सा, होता उसका रौब सही
साँप-जैसी नक्शेदार, पूँछ उसकी क्यों नहीं?
मिले अगर सब कुछ, तो मिटे जी का जंजाल
जिसे देखे उसे कहे, 'देखो मेरा हाल!"
रोया बहुत आया जब बाईस आषाढ़
चाहा जो वही हुआ बिना प्रयास।
रोना-धोना भूलकर, खुशी से भरा हुआ
चुपचाप अकेला वह बैठकर सोचता।
हुश् हुश् कूद कर हाथी कभी नाचे क्या?
केला गाछ खाकर भी कंगारु बचे क्या?
भौंड़े मुँह कुहू तान सुन लगे कैसी ?
नाक सूँड़ टिके कहाँ देह मेरी ऐसी?
'देखो बूढ़ा हाथी उड़ा', कोई गर गाली दे?
कान खींच पूँछ रगड़, 'दोगला' कह ताली दे?
हड़का के कोई अगर मेरे कह दे मेरे सामने
"कहाँ का है कौन है तू , नाम है न धाम रे?"
कहने को खाक है, जो जवाब देगा,
मन में है उथल पुथल, सिमट कर बैठा।
घोड़ा हाथी साँप नहीं, नहीं हूँ मैं बिच्छू,
तितली या मधुमक्खी, यह भी नहीं किच्छु ।
मच्छी, बेंग, पेड़ पत्ता, पानी मिट्टी, लहर ही
न तो जूता, न तो छाता, कहीं न पाऊँ ठहर ही।

मुंडा बेल के तले जाए कितनी बार?

तपकर लाल ईंट का झावाँ उस पर जा बैठा है राजा -
मूँगफली का भरा लिफाफा खाए लेकिन निगले ना।
सटी है तन से गर्म कमीज़ तपती जाती जलती पीठ
राजा बोले -"बरखा प्लीज़! नहीं तो हिसाब मिलबे ना।"
सारी-सारी दोपहर बैठा गुपचुप बेखबर,
मुँह को हाँड़ी-जैसा कर हाथों में इक स्लेट जकड़।
पसीने से है भीगा जाए अपने आप ही भौंचकराए
अंटसंट कुछ लिखता जाए शब्द एक न आए पकड़।
तीखी धूप आकाश तपे, सिर के सारे रोंए फूटे,
घूम घूम मगज में नाचे सारा खून झनर-झनर झन;
ठाँय-ठाँय दुपहर का तपना राजा बोला, "मुश्किल बचना,
जल्दी ले आ बरफ, दौड़ना! कैसा तो मन छनर-छनर छन।"
बोलें सब, "क्या हाय हुआ! सोच सोच कर राजा मुआ!
खोलो राजा खोलो मुखवा- हम पर ऐसा शासन क्या?
लाल चेहरा पड़ा है फीका कच्चा आम ज्यों तला तेल का,
क्यों राजा को बहे पसीना हमें जानना वारण क्या?
राजा बोले, "कौन सुने जो बात घूमती है मन में
मगज के कोने कोने में खींच उसे मैं बाहर लाता,
बोलूँ मैं वह बात सुनो, जितना सोचो जितना गुनो,
जवाब नहीं उसका कौनो नहीं कूल-किनारा पाता!
पोथी-पन्ने में लिखा हुआ, 'मुंडा बेल के नीचे गया'
इसमें जरा भी शक है क्या प्रश्न है 'कितनी बार जाता?'
यही बात जो अब तक भी कोई पाया समझ नहीं
पुस्तक में भी नहीं लिखी, जवाब न कोई दे पाता।
लाख बार अगर जाए कैसे जाना रुक पाए?
कोई दिशा न समझ आए क्या न कोई बचा उपाय?
जैसे ही यह बात कही आया इक दुबला भिश्ती
आगे झट गर्दन कर दी किया प्रणाम उसके दो पाएँ।
"यह क्या हुजूर?" हँस के बोला, आखिर ऐसी बात है क्या
मुंडा रोज मिलता यहाँ देखूँ इन आँखों परिष्कार-
हमलोगों के बेलतले रोज आके मुंडा खेले
मोटामोटी महीने में कम से कम पच्चीस बार।"

समझाकर कहना

ओ श्यामादास! आ तो जरा, बैठ तो जरा इधर,
देख बात वह समझाऊँ तुझको पाँच मिनट के अंदर।
बुखार हुआ है? झूठ बात है, यह तुम सब की चालाकी-
अभी तो बबुआ चीख रहे थे, सुनता हूँ, ना बहरा जी!
मामा है बीमार? बुलाना बैद? बुलाना शाम को जाकर
नहीं तो दूँगा मैं बतला बचेगा मामा क्या खाकर।
आज तुझे वह बात समझाकर ही मानूँगा।
समझा नहीं तो ठोक ठाक कर माथे में डालूँगा।
बात कौन सी? वह भी भूला? छोड़ी उसे हवा में?
परसों रात था क्या बतलाया बिष्टू बोस के अँगना में?भूला
नहीं तो बढ़िया, फिर से सुन ले तो क्या जाता?
दूर दूर क्यूँ रहता है, भूले भी इधर नहीं आता?
रुक मैं कहता, कहाँ भागता? बैठो यहाँ ज़मीं पर-
अरे, आज के छोरे, उनको सब्र कहाँ रत्ती भर।
अब देखो! बैठा क्यों? सारी किताब जा ला उतार कर-
तेरे रहते बोझ थोक का लादूँ क्या मैं अपने पर?
ध्यान से लाना, ठहर मैं पकड़ूँ - आखिर मुझे लगा ही डाला-
हे भगवान! किस अकल से आखिर यह शब्दकोश निकाला?
बहुत हुआ! आ जरा बैठ अब इधर यहाँ इस ओर,
ओ गोपाल, खेंदिया से कुछ पान लाने को बोल।
हाँ मैं था कह रहा, बने वस्तुपिंड सूक्ष्म से स्थूल,
अर्थात लग रहा धक्का है पंच भूत के मूल।
पहले लो यह जान कि कैसे और कहाँ से बनता
इस प्रपंचमय विश्वतरु की जड़ में है रस जमता।
यानी कि यह मान लो कि धूप पड़ी है घास में,
और मान लो, वहीं है लेटी हुई चाँदनी पास में-
अब देखो! इतने में तुझे उवासी आई, इसका मतलब क्या?
आस्मान ही तक रहे, या जा रहा कान में यह सब क्या?
क्या बोला तू, यह सब है बकवास अनाप शनाप?
पहले ही कहा था मैंने, समझने को चाहिए दिमाग।
गोबर भरे दिमाग तुम सबके, बने हैं कंडे वही सूख कर ,
कोई बात घुसानी संभव भी है क्या उनके अंदर?
ओ श्यामादास! उठ क्यों पड़ा? बस, तुझे भागना ही आता!
नहीं सुनना था तो क्यों बेमतलब तंग करने आ जाता?
सार तत्व न कान में जाता, जितना मरुँ मैं चीख-चीख कर,
जी करता इन बदमाशों के कानों को दूँ ऐंठ रगड़।

शब्द कल्प द्रुम!

ठसठास धूम धड़ाम, सुन लगे झटका
फूटा फूल? ऐसा बोलो! मुझे लगा बम था!
साँय साँय सन सन, मारे डर कान बंद
देखो देखो, दौड़े कैसे फूल की सुगंध?
छुड़मुड़, छुपछाप! ये क्या सुनूँ भाई रे!
देखो देखो ओले गिरे! बाहर न जाई रे!
चुपचाप सुनो जरा! झप झप झपास्स!
चाँद क्या डूब चला? - गप गप गपास्स!
खेंस खाँस घेंच घाँच, रात कटी जाए रे!
धूड़ धाड़, चूर मार, नींद टूटी नाएँ रे!
घर्र घर्र, भन् भन्, घूम रही चिंता,
मन कितना नाचे सुन, धा धेई धिनता!
ठुन ठान ढन ढन, व्यथा कई बजे रे!
फट फट सीना फटे, तभी शाम सबेरे!
हो हो हो मार मार! 'बाप बाप चीत्कार
धोती की काँछ मारी? भाग अब मेरे यार।

बुढ़िया की कुटिया

हँसमुख गालों में भरे हुए मूढ़ी
जर्जर कुटिया की झुर-झुर बूढ़ी।
बिछौने में जाले हैं, सिर में है धूल
मिचमिची आँखें, है कूबड़ रहा फूल।
काँटा से घर जोड़ा, गोंद से साटा,
धागे से बाँधा, जिसे थूक से चाटा।
भार देते डर लगे, गिरे नहीं घर,
खक्-खक् खाँसते, हिले खड़-खड़।
डाके कोई फेरीवाला, हाँके कोई गाड़ी
ढह पड़े काठ बाँस, धँसे घर बाड़ी।
टेढ़ा-बाँका घर-द्वार खाली खाली अरे,
करते ही झाड़ बुहार काठ-लक्कड़ झड़े।
बारिश में भीगकर जब भी छत लटके,
अकेली उस बुढ़िया की लाठी पर अटके।
मरम्मत लगातार, करामात भारी
झुरझुर बुढ़िया, जिसकी जर्जर बाड़ी।

आकाश में मानो कोई इंद्रधनुष खिला है,
छोड़ काज देखें लोग, कैसी ये बला है।
देखके इसको होकर गुस्सा, कहे खुंदकी बुड्ढा,
देख रहे क्या, अरे रंग तो जरा न इसका पक्का।
****
ढम ढम, ढाक ढोल, पीं पीं बंसरी,
टन टन घंटा, झन झन खंजरी।
धूम धड़ाम, बाप बाप, भय से सब भौंचक्का,
साहब के घर मुन्ने का नया दाँत गया है देखा।

बंबागढ़ का राजा

पता किसी को, क्यों सदा ही बंबागढ़ का राजा
फोटो बँधवा कर के फ्रेम में रखता अमावट भाजा?
रानी के माथे में आठों पहर बँधा क्यों तकिया?
कील ठोंकता पाँवरोटी में क्यों रानी का भइया?
सर्दी होने पर लोग वहाँ के क्योंकर खायँ कलैया?
चाँदनी रात में सबकी क्यों आलता रँगी हैं अँखियाँ?
क्यों सारे उस्ताद माथे से रहें लिहाफ लिपटाए?
पंडित सारे चँदिया पर क्यों डाकटिकट चिपकाएँ?
रोज रात को जेबघड़ी क्यों घी में रखें डुबोकर?
कागज सरेस का क्यों बिछवाएँ राजा के बिस्तर पर?
बीच सभा में राजा क्यों 'हुआ हुआ'चिल्लाए?
क्यों राजा की गोद में बैठा मंत्री कलश बजाए?
क्यों सिंहासन पर लटकाई फूटी बोतल शीशी?
क्यों कुम्हड़े से क्रिकेट खेलती है राजा की फूफी?
पहन हुक्के की माला नाचे क्यों राजा का चाचा?
क्यों घटता है घटता है जो, कोई तो बतला जा?
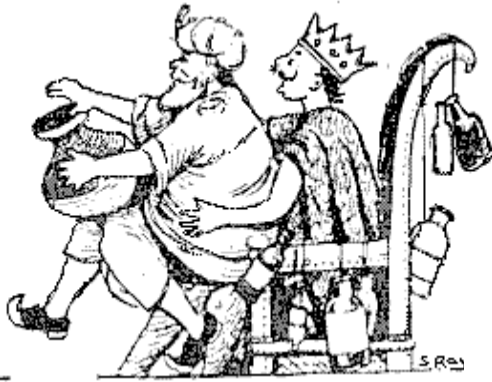
इक्कीसी कानून

शिव ठाकुर के अपने देश,
आईन कानून के कई कलेश।
कोई अगर गिरा फिसलकर,
ले जाए प्यादा उसे पकड़।
काजी करता है न्याय-
इक्कीस टके दंड लगाए।

शाम वहाँ छः बजने तक
छींकने का लगता है टिकट
जो छींका टिकट न लेकर,
धम धमा दम, लगा पीठ पर,
कोतवाल नसवार उड़ाए-
इक्कीस दफे छींक मरवाए।

अगर किसी का हिला भी दाँत
जुर्माना चार टका लग जात
अगर किसी की मूँछ उगी
सौ आने की टैक्स लगी -
पीठ कुरेदे गर्दन दबाए
इक्कीस सलाम लेता ठुकवाए।

कोई देखे चलते-फिरते 'गर
दाँए-बाँए इधर-उधर
राजा तक दौड़े तुरत खबर
पल्टन उछलें बाजबर
दोपहर धूप में खूब घमाए
इक्कीस कड़छी पानी पिलाए।

लोग जो भी कविता करते
उनको पिंजड़ों में रखते
पास कान के कई सुरों में
पढ़ें पहाड़ा सौ मुस्टंडे
खाताबही मोदी का लाए
इक्कीस पन्ने हिसाब करवाए।

वहाँ अचानक रात दोपहर
खर्राटे कोई भरे अगर
जोरों से झट सिर में रगड़
घोल कसैले बेल में गोबर
इक्कीस चक्कर घुमा घुमाकर
इक्कीस घंटे रखें लटकाकर।

हुक्कामुखी भुक्खड़

हुक्कामुखी भुक्खड़ बंगाल जिसका घर
कभी नहीं हँसता, देखा है?
नहीं देखा के माने क्या? उसको कोई जाने क्या?
कोई कभी पास उसके रहा है?
मामा उसका श्यामकुमार अफीम का जो थानेदार
उसे छोड़ कोई और है नहीं उसका -
इसी से वह अकेला चेहरा लिए ढीला
बेचारा है बैठा रुँआसा?
थपथप पैरों पर नाचता था ऐशकर
चेहरे पर होती थी मस्ती
गाता था सारे दिन 'सारे गामा टिमटिम'
गद्गद् रसभरी मूर्ति!
उसी दिन तो दोपहर बैठा वहाँ ऊपर
खा रहा केला कच्चा खच् से
इसी बीच हुआ क्या? मामा उसका मुआ क्या?
या फिर पाँव टूटा भच् से?
कहे हाँक हुक्कामुखी "अरे दुर! ऐसा नहीं
दिखे नहीं तुम्हें मेरी चिंता?
मक्खी को कैसे मारूँ जितना ही अधिक विचारूँ
यही सोच-सोच दिन गिनता !
दाहिने जो रहता - कानून मेरा कहता
मार इस पूँछ से करुँ ध्वस्त;
बैठे जो बाँए अगर मैं न पीछे हटूँ मगर
पूँछ में है इसका भी अस्त्र!
अगर जो कोई पाजी बीचोबीच आ बैठा जी
ऐसे में क्या करुँ समझ न पाऊँ रे --
मेरी मुश्किल तो देखो यार कौन सी पूँछ से दूँ मैं मार
दो से ज्यादा पूँछ कहाँ से लाऊँ रे?

धिड़े धिड़े द्रुम

दौड़े मोटर घरर घरर दौड़े हर ओर गाड़ी;
दौड़ें लोग कामधाम में होड़ मची है भारी;
दौड़ें कई पागल जैसे कई आएँ नीचे-
साहब मेम डर कर घबराएँ, 'मामा पापा' चीखें!
फिर भी हम हैं ठोकें तबला गाएँ गीत जबर,
"धिड़े धिड़े द्रुम! धिड़े धिड़े धिड़धड़!"

बारिश के दिन बादल आएँ, कीचड़ भरी हैं सड़कें,
ठंडी रात गठिया जुकाम से क्यों हो दादा मरते?
सुबह हो या शाम हो या हो दोपहर बेला,
दफ्तर हो जाना या हो बहुत काम का ठेला,
लाया देखो चाँदनी रात से हूँ यह गीत हड़पकर
"धिड़े धिड़े द्रुम! धिड़े धिड़े धिड़धड़!"

मूर्ख किताबी जो हैं वे तो बैठ अकेले पढ़ें
कोई घोंचू बने तो कोई यों ही भौंचक रहें
कोई सोच-सोच के हारा, मुँह में लग गई काली;
कोई बैठा बुद्धू जैसा मूँड़ हिलाए खाली।
यही है बेहतर भूल फिकर, छेड़ो तान ही कसकर,
"धिड़े धिड़े द्रुम! धिड़े धिड़े धिड़धड़!"

हो बेजार जो, समय कर रहे अपना केवल नष्ट-
चलते भी चले, खटते भी चले, पाते कितना कष्ट!
असली बात समझ न पाए, तब भी न कोई चिंता,
सुनो ध्यान से बीच गान के, तबला बाजे धिन ता!
पकड़ो धार, हो पहाड़ ही चाहे जोश में जाओ भिड़,
"धिड़े धिड़े द्रुम! धिड़े धिड़े धिड़धड़!"

****
मासी रे मासी, आए मुझे हाँसी,
सेम उगे जो नीम गाछ पर-
गोबरछत्ता हाथी के सिर पर
अंडा बगुले का कौवे के घर।
****
क्या बतलाऊँ हुगली जाकर,
देखा मैंने लुकछिप कर,-
सिर पे बिन टोपी पहने,
घूम रहे थे तीन सुअर।

नारद! नारद!

"हाँ रे! तूने कल क्या,   सादा को लाल कहा?
(और) उस दिन सारी रात,   भद्दे सुर में बजाई नाक?
(और) सुना जो तुमने बिल्ले पाले, तुमसे सँभले नहीं सँभाले?
(और)सुना लोग सब तेरे घर के, कोई नहीं हैं दाढ़ी रखते?
क्यों रे बेटा इस्टूपिड? पीट-पीट करुँगा टिट!"
"चोप्प रहो तुम स्पीक नॉट, मारूँ नस पर फटाफट -
फिर जो कभी आँख दिखाओ, या फिर तुम गुस्सा दिखलाओ,
चिल्लाए कभी बुरे अंदाज़ में, झूठ झूठ ऊँची आवाज में-
कौड़ी भर आई डोंट केयर, जान लो मैं रुस्तम हूँ मगर?
फिर तुम उछले? आलराइट, कम आन फाइट! कम आन फाइट!"
"घुग्घू देखे, फाँद न देखी, टेर पाओगे आज अभी!
मामा आज यहाँ जो रहता, तुमको पीट बनाता भुर्ता।"
"अरे, अरे! मारेगा क्या? पुलिस बुलाता हूँ रूक जा!
"अरे, अरे रे, क्रोध करो ना, क्या चाहिए भाई कहो ना!"
"हाँ, हाँ, सच तो यह है खालिस, मुझे न तुमसे कोई रंजिश!
झूठमूठ क्यूँ लड़ना चाहो? भेरी-भेरी सॉरी, लो चूरन चाटो!"
"शेकहैंड बोलो सब माफ, चलो यहाँ से घर चुपचाप,
परवाह डोंट, इट्स आलराइट, हाऊ डू यू डू, गुडनाइट।"

कैसी मुश्किल !

लिखा सभी कुछ इस किताब में दुनिया भर की सभी खबर
सरकारी दफ्तर में कैसी किस साहब की होती कदर।
कैसे चटनी बनती है और कैसे पुलाव पकाते
सारे नियम मुक्केबाजी के बढ़चढ़ कर बतलाते
साबुन स्याही दाँत का मंजन बनाने के हैं कायदे-कित्ते
पूजा पर्व तिथि, श्राद्ध की विधि, इनके भी हिसाब हैं जित्ते।
इसमें लिखा सभी कुछ लेकिन, इतना ही बस नहीं लिखा -
कैसे रोकूँ उसको, पीछे यह जो पगला साँड़ दिखा!

भूतों का खेल

परसों रात बिना चश्मे के मैंने साफ साफ देखा,
पाँतभूत का ज़िंदा पूत पूनों में था खेल रहा।
गोद में माँ की खेल रहा था हाथ व पाँव उछाल उछाल
लाड़ से भरकर हल्ला-गुल्ला करता कितना माँ का लाल।
घीरे से वह हँसी भूतनी माँ की मैंने सुन ली, कटकट-
खींच रही बच्चे का झोंटा, देखें बच्चा कितना चटपट।
काठ के सुर में हँसी जोर की शोर का बढ़ता पारा
मानो घिसघिस घिचघिच करता काठ को चीरे आरा।
बड़ी खुशी से घूँसा मारे, बड़े जोर से रगड़े कान
बड़े प्रेम से फेंक दे ऊपर, और जोर से गाए गान।
बोले, "आ रे मेरे गंदू मंदू भुक्खड़ सुक्खड़ पुत्तर,
फड़फड़ करता पंख इधर आ, हँसते ओ उल्लू सा सुंदर!
बंदर नाचनचैया ओ रे मेरे लाड़ प्यार के कुक्कड़,
ओ रे, गंधबिलाव अंधबन के, ओ रे मेरे हुक्कड़!
ओ रे बादल धूप में जैसे जेठ रहा हो बरस बरस,
छिला हुआ रंदे से ओ रे मीठा मोठ मुलेठी का रस।
मेरे चूल्हे पर चढ़ी हाँड़ी में भरता छौंकों की किलकार,
ओ मेरी चाँदनी रात की उनचास पवन का सपन-सवार।
ओ रे मेरे गोबर गणेश, मैदा ठुँसा है थुलथुल तू,
अगर कभी रोया तू मेरे पोपले मोती झटरोंदू-"
ऐसा कहकर मारे उसने कीचड़ के थप्पड़ फट से,
फिर क्या, वह खेल भूतों का बिलाया जाने कहाँ झट से।

शरारती

अरे बाप रे, क्या शरारती हैं ये पाजी लड़के!-
या तो जेल जाएँगे या फिर रहेंगे फाँसी चढ़के।
देखो कैसे भूत बना है मुँह पर आटा लेप
और तोड़ता ठाँ-ठाँ शीशी ठोक-ठोक कर स्लेट!
उसको देखो रेंग रेंग कर अलमारी पर चढ़ता
गुस्से में आकर खटिए से धूमधड़ाम गिर पड़ता!

अरे बाप रे, क्या शरारती हैं ये पाजी लड़के!-
दूधभात को छोड़ें खाएँ सिलबट्टे को रगड़के !
इस को देखो दाँत नहीं हैं, जीभ से करे घिसाई
बड़े लगन से चूसे मोमबत्ती और दियासलाई!
उसको देखो नीली स्याही घोल रहा है घर भर
और खपाखप मक्खी डाले मुँह में पकड़-पकड़ कर!

अरे बाप रे, क्या शरारती हैं ये पाजी लड़के!-
खून हो जाता टॉम चाचा, वह रोटी खाता अगरचे!
शुबहा हुआ तो सूँघकर बूढ़े ने रोटी न खाई,
इसे देखकर फों फों कर गुस्साए दोनों भाई।
मुँड़े हुए सिर पर गुस्से से खड़े बाल हैं लाल
'बाप-बाप' बोलकर भागा चाचा चीते की चाल।

****
सुना तूने क्या कह गया सीतानाथ बंद्यो?
आस्मान के बदन में है खट्टी खट्टी गंध-ओ?
खटास नहीं है होती जब होती है बरखा-
चाट के तब देखा इसको बिल्कुल ही है मिट्ठा।
****

खटर पटर शहर में क्यों, कहो रे, कहो भाय,
बैद सारे आलू-भात क्यों नहीं रे खायँ!
जाता आलू भेजे में, कहता है कागज,
पनपती फिर बुद्धि नहीं, नष्ट होता मगज।
****

गरुड़राज का छौना

गरुड़राज का छौना, हँसना उसको मना
हँसने की बात करो तो कहता
"हँसूँगा ना-ना, ना-ना,"

सदा ही उसको त्रास, मिल जाए न हास
एक आँख से मिटमिट हरदम
देखे आसपास

आँखों में है नींद नहीं, कहता है खुद को खुद ही

मारूँगा मैं तुमको निश्चय
हँसे जो अगर कहीं

कभी न जाता जंगल न कूदे बरगद पीपल
दखिनी हवा की गुदगुदी से
आए न हँसी अमंगल

चैन नहीं उसके मन काले मेघों के कण-कण
भाप हँसी की उफन रही
कान लगा सुनता हर क्षण

किनारे झाड़-झंखाड़ रात का अंधकार
जुगनू चमके रोशनी दमके
हँसी की आए बाढ़

हँसते हँसते जो खत्म हो रहे सो
गरुड़राज को चोट लगती है
क्यों न बूझते वो?

गरुड़राज का घर गया धमकी से भर
हवा हँसी की बंद वहाँ पर
हँसने की है रोक वहाँ पर।

आह्लादी

हँसते हैं हम, हँसते देखो, हम आह्लादी हँसते,
तीन जने मिल टूटे दाँतों से होड़ लगाकर हँसते।
हँसते हँसते आते दादा, आता मैं, आता है भाई,
क्यों हँसते हम कोई न जाने, हँसते क्योंकि हँसी है आई।
सोच रहे हैं, क्यों हँसते हैं? कब जाएगी हँसी यह छूट,
मगर सोचते ही फिक फिक फिक मुँह से हँसी है पड़ती फूट।
आती हँसी है आँख जब खोलें, हँसी आती जब आँख लें मूँद,
आए हँसी गर चिँउटी काटें, नाक में या डालें नाखून।
हँसें देखकर चाँद कलाएँ, करघा चरखी, मछुआ-पतवार,
नौका फानूश चींटी मानुष, रेलगाड़ी और तेल का भाँड़।
पढ़ते पढ़ते हँसते हैं 'क ख ग' और स्लेट देखकर,
हँसने लगे तो पेट से मानो सोडा निकले उफन-उफन कर।
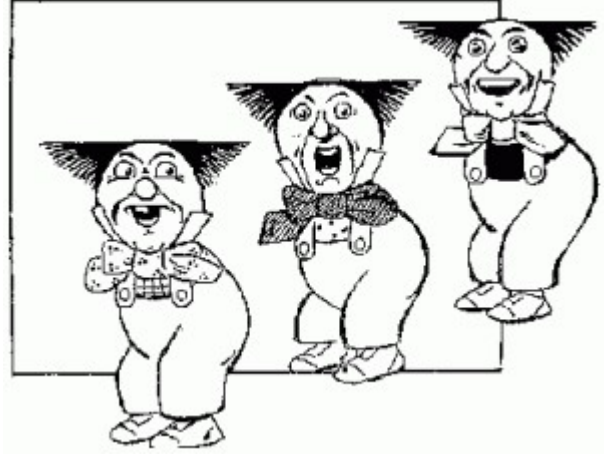
हाथ गणना

चाचा नंद कहलाता, नंद गोसाईं पास गाँव का,
बूढ़ा है सज्जन, सीधा सादा, शांत स्वभाव का।
कोई रोग न शोक उसे था, रहता था मन के सुख में,
हुक्का लिए हाथ सदा ही, हँसी खेलती थी मुख में।
आया कभी खयाल अचानक, गया दिखाने हाथ -
लौटा जब तो सूखा दुबला, टकटक काँपें दाँत!
कुछ पूछो तो बात न करता, आस्मान तकता जाए,
बीच बीच में काँप उठे वह, आँख से आँसू बहता जाए।
जैसे सुना दौड़ आए सब, दौड़े आए बैद मोशाय,
पूछें सारे, "रोते क्यों हो? हुआ क्या आखिर नंद गोसाईं?"
बोला चाचा, "बोलें क्या हम, मेरे हाथ में साफ लिखा,
शनि चढ़ा है सिर के ऊपर , चक्कर में है आयु रेखा।
पता नहीं था, मुझको लगे ग्रहों के कितने फेरे-
चली जाए जो जान अगर, तो मुझको कौन रखे रे?
बाप दादा के पुण्यों से ही साठ साल हैं पार किए-
तुमलोगों का नंद चाचा अब इस दुनिया से कूच करे।
कब कैसी विपदा आएगी, हाय कौन सकता है जान"-
ऐसा कहकर रोने लगा वह, छेड़ भयंकर ऊँची तान।
आज सुबह ही देख के आया चाचा का चौपाल,
हँसी नहीं, है हाथ में हुक्का, बूढ़ा है बेहाल।

****

सुनो सुनो कथा सुनो सुनो एक था गुरु
यूँ हमारी हुई कहानी शुरु।
वंशीधर और यदु जुड़वाँ दो भाई
यहाँ हमारी कथा खत्म हो जाई।

गंध विचार

काँसे का घंटा बजा फिर बैठे राजा सिंहासन,
छटपट छटपट काँप उठा, बूढ़े मंत्री का मन।
राजा बोला-"मंत्री, क्यों तेरे कपड़ों से आती गंध ?"
बोला मंत्री,"सेंट लगाया हमने- गंध नहीं यह मंद !"
राजा बोले, "कैसी यह गंध, सूँघकर बैद बताओ जल्दी,"
बोला बैद, "बताऊँ कैसे, मेरी नाक में है जो सर्दी।"
"रामनारायण पाँड़े को लाओ", राजा ने हुक्म किया
बोला पाँड़े , "मैंने है अभी अभी नसवार लिया-
नाक बंद है नस से, आखिर गंध कैसे इसमें जाए?"
राजा बोले, "तो फिर सूँघने कोतवाल ही आगे आए।"
कोतवाल बोला, "पान मसालेदार है खाया, डाला हुआ कपूर,
भरी हुई है खोपड़ी मेरी उससे ही भरपूर।"
राजा बोले, "फिर तो आए शेर पहलवान भीमसिंह",
बोला भीम , "आज तो मेरा बदन है सारा झिमझिम।
आया था बुखार रात में, हुजूर कहूँ मैं सच्ची बात"-
कहते कहते आँख मूँद ली, हुआ वहीं पर भूमिपात।
साला राजा का चंद्रकेतु ही पकड़ में आया आखिर,
राजा बोला, "इस बारे में तू ही कुछ चेष्टा कर।"
चंद्र बोले, "मारना ही है तो मारो जल्लाद बुलाकर,
यह कैसी ज़िद है राजा की, मारे गंध सुँघाकर?"
बूढ़ा नाजिर भी था हाजिर, थी नब्बे की उसकी उमर,
मन में सोचा, "कभी तो है ही मरना, तो फिर कैसा डर - "
हिम्मत की बूढ़े ने, बोला, "झूठमूठ करते बकवास,
पाकर हुकुम सूँघ सकता हूँ, गर हो मोटी बखसीस की आस।"
"एक हजार इनाम मिलेगा तुरत ही", बोले राजा,
इतना सुनकर जोश से बढ़कर आगे बढ़ा वह बूढ़ा।
नाक टिका कुरते पर उसने- सूँघी पूरी गंध,
डटा रहा वह, लोग दंग थे, सबकी घिग्घी बंद।
जैजैकार लगी होने फिर, बजा घंटा काँसे का,
कितनी ताकत बूढ़ी हड्डी में, फिर भी न वह मरता।

रोंदू

झटरुँदुए टुटपुँजिए सस्ते रोकर नाम कमाएँ,
खिसियाएँ खिसिर खिसिर, पिनपिनाएँ घिघियाएँ -
भूख लगे तो कूँ-कूँ रोएँ, डाँट खाएँ तो फफक पड़ें
कभी चोट गर लगे, या कभी डर से चमक पड़ें;
जरा-जरा में हँसें, जरा में रोएँ, रोकें रोना थोड़े में,
माँ का लाड़, दूध की बोतल या दीदी के गपोड़े में-
इसे कहूँ मैं मिथ्या रोना, कौन सुने असली रोदन ?
वह अवाक भौंचक रह जाए, जो भी परखे वह क्रंदन।
नंद घोष के पड़ोस में रहता बूथ साहब का बच्चा,
रोना उसका सुन के लगता उसका रोना सच्चा।
जब-तब रोता कभी नहीं वह, मन में पाल के रखता गुस्सा,
बाद में आए याद तो रोता, खून के आँसू वह राक्षस-सा।
कारण और विचार न कोई, आधी रात हो या हो भोर,
बिना वजह की गलाफाड़ वह, चीख गगनभेदी घनघोर।
हँकड़के दौड़े रोना उसका, नदी में जैसे आए बान,
हो हताश बाप-माँ बैठें, बहरे उनके हो गए कान।
लोहे का वह गला बाप रे! एक मिनट आराम नहीं,
रोना सावन सा झरता जाए, रुकने का ले नाम नहीं!
दो झुनझुना, नचाओ गुड़िया, खिला मिठाई सौ सौ बार,
पंखा झलो, करो आलिंगन, फूटेगी न हँसी की धार।
पलटी खा-खा कर वह रोए, झरे नाक से रोना,
घर-आँगन को निगलना चाहे, फाड़े वह मुँह जो ना।
सुनकर रोना भूत भी भागे, त्राहि-त्राहि सब लोग करें-
धन्य-धन्य है रोना तेरा, बूथ साहब के सपूत रे।

बिल्ले का गान

इस भद्दी रात में साँय-साँय वीरानी
पेड़ों ने घनी चादर मखमल की तानी
जट लगी काली लट झूले बट तले
धकधक जुगनू के चकमक जले,
चुपचाप चारों दिस झाड़झंखाड़,-
आ भाई गान करें आ रे बिलाड़।
गीत गाएँ कानों में चीत्कार करें,
किस गान से मन भीगे सुन कहूँ तोरे-
पूरब में आधी रात रंग छोपा पूरा
रतकाना चाँद उगे आधा अधूरा।
झटके से है याद आया मटके के पास
मालपूआ आधा पड़ा कल से बिंदास।
धड़ाधड़ दौड़ा जाऊँ, दूर से ही देखूँ,
जी-जान लगा होंठ चाटे कनकटी नखरू!
फूले गाल मुँह में मालपूआ ठुँसा,
फक् से बुझ गई मेरे जी की आशा।
मन कहे अब क्यों दुनिया में होना,
लगता है सब कुछ बिल्कुल जादू टोना।
सब कुछ घिनौना है सब खाली खाली,
घरनी की शकल मानों कालिख लेप डाली ।
दिल को तोड़े जो दुःख उसे गले में भर कर,
आओ गाएँ तान लगाएँ ऐसा जी-फाड़ू स्वर।

ठिकाना

अरे अरे जगमोहन - आओ, आओ, आओ, -
आद्यानाथ के मौसे का पता बताते जाओ।
नाम ही न सुना आद्यानाथ का ? खगेन को तो जानते हो?
श्याम बागची, खगेन का ही मामाससुर मान चलो।
जमाई श्याम का कृष्णमोहन, उसका बाड़ीवाला -
(भूल रहा नाम है क्या तो), उसके मामा का साला;
उसके फूफे का चचेरा भाई आद्यानाथ का मौसा।
बड़े भइया, जान आओ पता है उसका जौन-सा।
पता चाहिए? तो सुनो - आँवलातला मोड़ पर,
तिमुँहा सड़क जो जाती, वहीं एक लो पकड़,
चलो नाक की सीध, मगर आँख टिकाए दाँए,
चले चलते देखोगे आखिर, सड़क मुड़ेगी बाँए।
वहाँ देखोगे दाँए-बाँए पथ जाते हैं ढेर,
उसी भूलभुलैए में घूमो थोड़ी देर।
उसके बाद झट से मुड़कर दाँए से बल खा कर,
छोड़ो गलियाँ तीन, और फिर लौटो बाँए आकर।
तभी आओगे मुड़कर अमड़ातला मोड़ पर -
जाओ जहाँ जी करता हो, मुझे छेड़ना मत फिर।

गल्प सुनाना

"एक था राजा" - "ठहरो दादा,
राजा न था, राज प्यादा।"
"उसका मामा"- "मामा कैसा?
सब जानें वह फूफा उसका।"
"उसका था इक छागल छौना"
"छागल के क्या उगता डैना?"
"एक दिन उसकी छत के ऊपर"-
"टीन के घर में छत कहाँ पर?"
"बगीचे का इक उड़िया माली"-
"माली नहीं वह मेहर अली"
"बड़े शौक से गाए बिहाग"
"बिहाग नहीं! बसंत का राग"
"रोक अरे यह घिंचा घिंची" -
"बोलो तुम ही, अब मेरी चुप्पी"
"इतने ही में बिस्तर छोड़ के
हठात् मामा आया दौड़ के,
जोर से पकड़ा जड़ से बाल"-
"झोंटा कहाँ, वह गंजा लाल"
"गंजा है तो तुझको क्या?
अरे मूर्ख पाजी, बेहया!
पकड़ूँगा टोंटी कसकर
पीटूँ तुझको मूँड़ पकड़ -
बात-बात में खाली टोके,
जाएगा बेटा कहाँ भाग के?"

नोटबुक

यह देखो पेंसिल, नोटबुक हाथ,
यह देखो भर गई बात ही बात।
झटपट लिख डालूँ जो भी सुनूँ अच्छा -
पतंगे की कितनी टाँगें, खाए क्या तिलचट्टा;
चप-चप क्यों उँगलियों से गोंद है चिपकती,
गुदगुदी करने पर क्यों गाय है तड़पती।
देख सीख पढ़-सुन लगाकर दिमाग ,
सारा कुछ लिखा मैंने सोच अपने आप ।
कान करे कुटकुट, फोड़ा दुखे टनटन,
ओ रे रामा दौड़के आ, लेकर लालटेन।
कल से ही मन में लगा है इक खटका,
डालें किसमें गुड़ शक्कर, साबुन या गुटका?
इस वक्त सवाल यह लिख रखूँ सोचकर,
जानूँगा जवाब कभी भैया को कोंचकर।
कौन बतलाएगा पेट में मरोड़ क्यों?
तीखा अजवायन का अर्क लगे घोर क्यों?
तेज क्यों है तेजपत्ता ? तीखी है क्यों मिर्ची?
आते क्यों खर्राटे और घबराए क्यों है जी?
क्या होती दुंदुभि?होती क्या अरणी?
जानोगे तुम कैसे, नोटबुक तो पढ़ी नहीं।

डरो नहीं

डरो नहीं, डरो नहीं, तुम्हें नहीं मारुँगा -
सच कहूँ तो कुश्ती में तुमसे मैं हारूँगा।
बड़ा नरम मेरा मन भाई, हड्डी में भी क्रोध नहीं,
चबा-चबा तुमको खा जाऊँ, इतना मुझको बोध नहीं।
सिर पर मेरे सींग देखकर, जरा नहीं तुम घबड़ाना -
यही रोग है मेरे सिर में, मैं सींग किसी को मारुँ ना!
आओ-आओ मेरी खाई में, रह जाओ दिन चार,
रात्रि-दिवस रखूँगा सिर पर, बहुत करूँगा लाड़ ।
देख हाथ में मुग्दर मेरे, भागो नहीं जरा डर के,
इतना हल्का है भाई कि चोट न लगती मुग्दर से।
अभय दिया फिर भी न सुनते, पकड़ूँ दोनों टाँगें क्या?
आएगी तुमको अक्ल, जब मुँडी जकड़ दबाऊँगा ।
मैं हूँ, है घरनी मेरी, और हैं नौ-नौ बेटे मेरे-
सारे मिलकर काट खाएँगे, गर झूठमूठ तुम डरे।

ठसकदार गाय

ठसकी गाय, गाय नहीं, असल में है पाखी,
चाहो तो हारु के आफिस में देख आ जी।
आँखें हैं ढलढल, मुँह है विशाल,
फिटफाट खींची सीध, चुस्त काले बाल।
सींगें घुमावदार, पूँछ पेंचदार-
जरा सा छुओ, तो मारे लताड़।
खड़खड़ हाड़गोड़ खटाखट करे,
डाँटो तो लद्दड़ सी भौंचक गिरे।
बखाने रूपगुण, कविता की क्या मजाल,
वह देखो छवि उसकी- सूरत बेमिसाल।
ठसकी गाय लाड़ लेती टिक कर दीवार से,
कभी-कभी रो पड़े न जाने किस खयाल से।
कभी बोले धावा, तो कभी बिगड़ जाए,
कभी लगे दाँती तो धड़ाम गिर जाए।
खाए न वह दानापानी - घास पत्ता बिचाली,
खाए न वह छोले-सत्तू, मैदा या पीठाली।
चाहिए न आमिष उसे, शौक नहीं पायस का,
साबुन का सूप बस मोम का जायका।
और कुछ खा ले तो खाँसे वह खों-खों कर,
देह करे झनझन, टाँगें काँपें थर-थर।
एक दिन खा लिया कहीं से एक चिथड़ा-,
महीनों रही अधमरी सिरहाने ले तकिया।
खरीदना जो भी चाहे गाय यह ठसकी,
सोच विचार कर ले, दिलवाएँगे सस्ती।
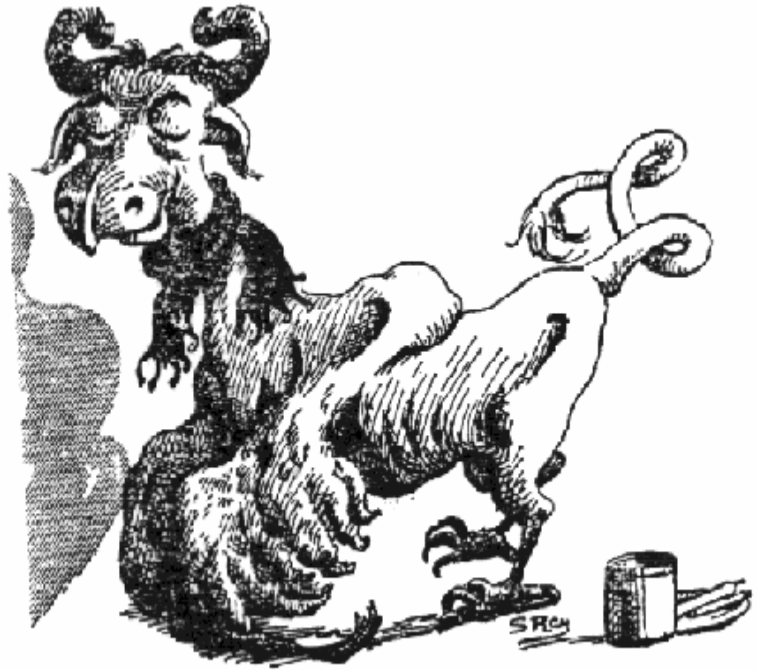
फिसल गया

देख बाबाजी देखो ना जी,   खेल देख रे देख चालाकी,
जादूगीरी बाजीगरी,   गिर-गिर गिर-गिर ओ पाखी - धप्!

उछल इसी से ताल ठोककर   तीर धनुष पे लगा ताककर
छोड़ूँ सीधे उसे तानकर,   हिस्स लगे वह तेरी जानपर - खप्!

रेंग-रेंग कर चलें खरामा,   फंदा डालें गोष्ठो मामा,
हाथ उन्होंने डलिया थामा,   अबके बाण चिड़िया ले आना - झट्!

वो मारा! पर फिसल गया -   तो मामा तू क्या बमक गया?
खच से छू पसली, निकल गया   बाण कहीं आ छिटक लगा? - फट्?

पहलवान

हाथी फेंकें लपकें जब-तब, खेल खेल में षष्ठीचरण,
उन्नीस क्विंटल का भारी उनका लोहे का है सख्त बदन।
एकदिवस एक गुंडे ने खींच कर उनको मारी लाठी-
लाठी वह उनकी कुहनी से लगते ही चट् से टूटी।
और दैव वश अभी उसी दिन चलते-चलते इसी सड़क पर,
भारी ईंट गिरी ऊपर से आकर हाय, उन्हीं के सिर पर।
टकराई उनके माथे से आकर जैसे ही वह क्षण भर,
धूर-धूसरित हुई ईंट वह, षष्ठी आगे चले बढ़ हँसकर।
काँपने लगें सब के सब, जब भी डाँट लगाएँ षष्ठी,
एक फूँक से सड़क मोड़ पे, बैलगाड़ियाँ खाएँ पलटी।
बात-बात में बड़े बड़े तखतों को क्षण में देते चीर,
स्नान करें बैठ पोखर में, सौ-सौ घड़े उड़ेलें नीर।
सुबह नाश्ते में लेते वे तीन टोकरी पिस्ते मेवे ,
साथ में गिनकर चौदह हँड़िया दही मलाई मुड़की लेवें।
दोपहर को भोजन से भरी देगचियों की कतार लग जाए,
उन्नीस मटकों में बर्फ डली शर्बत उनकी प्यास बुझाए।
और शाम को कुछ न खाते, सिर्फ मिठाइयाँ ही चालीस,
मगर रात को खाएँ जी भर, कचौरी पूड़ी दर्जन बीस।
देर रात को पैर दबाने आएँ दसियों चेले सारे,
धम धड़ा धम, मिलकर सारे पैरों पर मुग्दर मारें।
और कहूँ तो सोचोगे कहता है यह बढ़ा चढ़ाकर-
खुद ही आओ देख किसी दिन बनियाटोला जाकर।
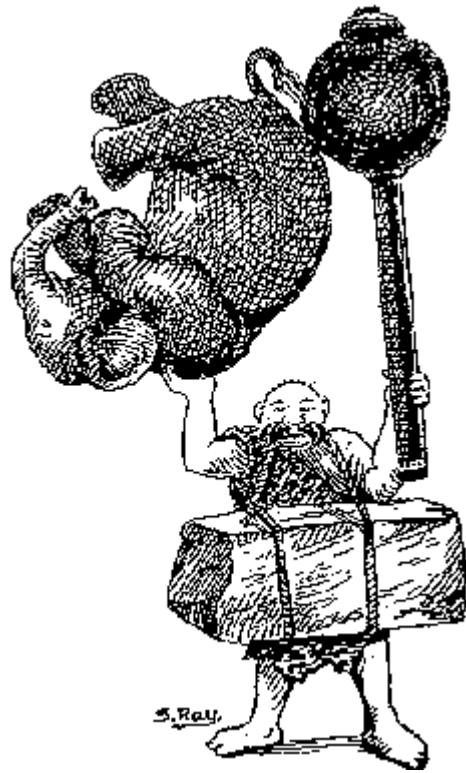
विज्ञान शिक्षा

आ तेरा मुंडी देखूँ, जाँचूँ मैं 'फुटस्कोप' लगा
कितने मिलावटी गोबर से भरा है तेरा भेजा।
खुलता मगज किधर से, रहता किधर से दबा-दबा
कितना भुसभुस मगज है तेरा, औ' कितना खोखला पड़ा
मन तेरा किस देश में बसता, क्यों तू भूले बात हजार
आ देखूँ किस फाँक से खुलता, तेरे मगज का फूटा द्वार
जाला लगा घिसा माथा यह, फटा हुआ लगता जैसे
आओ करें विश्लेषण तेरा- चुप रह, पाता भय कैसे?
इधर कोने में कान पकड़ हो खड़ा, जीभ को उलट दिखा
अच्छी तरह से समझ-बूझ कर देखूँ, जैसा विज्ञान में लिखा।
माथे पर मैग्नेट फेंकूँगा, 'रिफ्लेक्ट' करूँगा बाँस लगा
'वेलोसिटी' निकाल ईंट से, देखूँ माथा चकराए क्या।

अगड़म बगड़म

मेघ मुलूक धुँआसी रात,
इंद्रधनुषी रंगों के साथ,
ताल बेताल ख़याल का सुर
खींची तान कंठ भरपूर।
यहाँ मनाही नहीं रे दादा,
नहीं रे बंधन नहीं रे बाधा।
यहाँ रंगीन गगन के तले,
हवा में सपन हिंडोला झूले,
नशे में सुर के झरना झरे,
आकाशकुसुम खुद ही खिले,
रंगा आकाश, रंगा है मन,
होता रहता चकित क्षण क्षण।
आज भाई मैं जाने से आगे-
कहूँगा वही जो मन को भाए।
भले न उसका मतलब हो,
लोग भले न समझें वो।
दे जाऊँगा आपके हाथ
अपने सोचों की सौगात।

रोके कौन जो दौड़े बात?
कौन मुझे जो रोके आज?
मेरे मन के अंदर आज
रह तबला धा धिन-धिन बाज-
जोर खटाखट घचाघेंच
कटे बात से बात की पेंच।
अंधकार को ढँके प्रकाश
उसकी गंध से बजे घंटाल।
गोपन प्राणों में सपन दूत
मंच पर नाचें ज्यों पंच भूत!
खाए कलाबाजी भुक्खड़ हाथी
हवा में उसकी टाँगें लहरातीं।
मक्खीरानी पक्खीराज-
डाकू बच्चा भोला आज।
आदिम समय का चाँदिम हिम
गाँठ में रखा घोड़े का डिम।
हुईं नींद से आँखें भारी,
गीत की लड़ियाँ खो गईं सारी।